



लोटपोट



हँसी और मस्ती की पाठशाला



VISIT...

LANZAROTE
Caliente.COM

लोटपोट

हँसी और मस्ती की पाठशाला

Visit:
www.lotpot.com

DIGITAL EDITION
ISSUE NO.34

Founder
Lt. Sh. A.P. Bajaj

Chief Editor
P. K. Bajaj

Editor
Arman Bajaj

Joint Editors
Anushka
Amisha

Editorial Department

Concept Illustration direction
Harvinder Mankar

Editorial Address:
LOTPOT FORTNIGHTLY
A-5, Mayapuri, Phase-I,
New Delhi-110064.
Ph: 28116120, 28117436
Fax: +91-11-41233139
Email: editor@mayapuri.org.com
Web: www.mayapuri.org.com

Printed at ARDBANS PRESS,
Shree S. L. Prakashan
A-5, Mayapuri, Phase-I, N.D. 110064.
Owner, Publisher, Printer
Ramesh Kumar Bajaj
Printing Place:
A-5, Mayapuri, Phase-I, New Delhi-110064.

For Advertising: Shekhar Chopra
E-mail: shekhar@mayapuri.org.com

संपादकीय

परिस्थितियाँ कितनी भी प्रतिकूल हो-
समाधान के लिए कुछ न कुछ अवश्य किया
जा सकता है।

सुरेश गांव में तालाब के किनारे खड़ा था और तभी उसने देखा कि तालाब में एक बच्चा डूब रहा है। बच्चा मगर कौ गृहार लगा रहा था पर पास में कोई अन्य व्यक्ति नहीं था सुरेश को तैरना नहीं आता था समस्या अत्यंत गम्भीर थी।

सुरेश ने चिल्लाना शुरू किया और शीघ्र ही कुछ दूरी पर खिलते हुये बच्चों की भीड़ जमा हो गई। उनके पास दूबते हुए बच्चे को बचाने का कोई भी साधन नहीं था सुरेश ने सभी बच्चों से कहा कि वे अपनी कमीजें उतार लें। कमीजों की बाँहे जोड़-जोड़ कर एक लम्बी चेन बनाई गई। उस का एक सिरा उस बच्चे की कमर में बांध दिया गया। जिसे थोड़ा तैरना आता था। चेन का दूसरा सिरा किनारे पर खड़े बच्चों ने पकड़ लिया। तैराक बच्चा पानी में कूद गया। शीघ्र ही उसने बच्चे की एक टांग पकड़ी और जोर से आवाज दी 'खेंचो'।

किनारे पर खड़े बच्चों ने खींच कर दोनों को तालाब से बाहर निकाल लिया। एक बच्चा स्काउट रह चुका था उसने दूबते बच्चे को उल्टा कर उस की पीठ पर दबाव डाला और इस विधि से पेट का काफ़ी पानी बाहर निकल गया।

कभी एक बच्चे ने जाते हुए एक ताँगे को रोक लिया और उस में डालकर तालाब से निकाले गए बच्चे को अस्पताल ले जाया गया। समाचार गांव तक पहुँच चुका था और बच्चे के पिता भी हस्पताल पहुँच गए। बच्चे की जान बच गई।

हम सब के जीवन में ऐसी घटनाएँ होती रहती हैं। ऐसे में निराश नहीं होना चाहिए। समस्या कितनी भी जटिल हो, निवारण के लिए कुछ न कुछ अवश्य किया जा सकता।

LOTPOT title is registered with the R.N.I. Govt. of India. All rights are reserved with publisher for every content published in Lotpot. Nothing should be reproduced in any form without the permission of publisher. All contents published in the Lotpot are work of fiction and any resemblance to people place etc is purely incidental. Illustrations are based on the imagination of artist and editor and for publisher are not responsible for it. Editor and publisher may not be in agreement with the opinion of writers over the published contents. If any body has any objection towards any published content, they are welcome to submit the same with the publisher and it will be published as well. All disputes will be subject to the jurisdiction of Delhi only Rs 4/- surcharge extra for Nepal, Sri Lanka, Dubai and other Gulf countries.





नटखट नीटू

० हरविन्द मांकड

हा हा हा..
अक्खफोड़वा हूँ मैं...
डॉक्टर डेविल का
सेनापति...हा हा हा

ओह.. डॉक्टर डेविल
ने एक नया शैतान भेजा
है, दोस्तों

यानि एक नया
खतरा

पर हम इसे ही
खतरे में डाल
देगे... हा हा

एक आंख से सारी
दुनिया देखता हूँ मैं..
और तुम्हें तो मच्छर
की तरह मसल
डालूंगा मैं



देखते जाओ... कैसे
हजम कर जाऊंगा मैं..
. यम यम यम

अरे बाप रे...
इसकी जीभ ने तो
मुझे जकड़ लिया है

इसके इरादे तुम्हें खाने
को हो रहे हैं नौटू

क्या SS.. रोबो...
कुछ करो, नौटू की
जान खतरों में है

हा हा हा...बचोगे
तुम लोग भी नहीं...
हा हा हा



मेरे होते कुछ
नहीं कर पाओगे

शाबाश रोबो..
एरियल से हिट
करो इसे

येस बाँस

रोबो के एरियल ने अकख फोड़वे की इकलौती
आंख पर वार किया

ओह



आह... मेरी आंख
फोड़ दी

वच गया
मैं

मुझे वापिस
डॉक्टर डेविल के
पास जाना होगा

याह...
दुश्मन डरकर
भाग गया

शाबाश रोबो.. तुमने
सही टाइम पर
एरियल का बार
किया

और दुश्मन की
आँख फोड़ दी
हा हा हा

डॉक्टर डेविल
तो रो रहा
होगा... हा हा
हा

मोटू पतलू और बीनू बकरा की वापसी

कथानक एवं चित्रांकन - हरविन्द्र मांकड़



अहा... पांच साल जेल
में रहने के बाद बीनू
बकरा रिटर्नऽऽ

वाँस.. आप भूल
गये, दस साल जेल
में थे.. आज ही
भागें हो वहाँ से..

और अब मोटू को
मारने जा रहे हो,
जिसने तुम्हें पकड़वाया
था

हाँ.. वाद आया मोटू..
फुरफुरी नगर वाला मोटू..
समोसे खाने वाला मोटू..
वो नहीं बचेगा आज..

बाँस यह बात
भूल मत जाना

कौन सी
बात?

मोदू को मारने
की बात

ओह हाँ, वो बात
भला मैं कैसे भूलूँगा..
उसी के लिए तो जेल
तोड़ के भागा हूँ

आजकल सीकवल
फिल्में ज्यादा चल
रही हैं. सिंघम
रिटर्न्स.. दबंग 2..

पुरानी हिट
चीजें लोग नये
फ्लेवर में
देखना पसंद
करते हैं.

मेरा भी मन कर
रहा है कि समोसे
रिटर्नस खाऊँ

तुझे बस खाने
की ही पड़ी
रहती है

आदमी खाने का
ही भूखा होता है..
इज्जत तो कहीं ना
कहीं से मिल ही
जाती है

बेटा.. इज्जत भी
जाने ही वाली है..
बस कहीं जाकर
छिप जा तू..

क्यों.. ऐसा क्या
हो गया कि मुझे
छिपना पड़ेगा

इसके किसी दुश्मन
की वापसी तो नहीं
हो गई..



वीनू बकरा जेल से
फरार हो गया..

क्याऽऽ वीनू
बकरा
रिटर्नस..

उसे वो तुने ही जेल
पहुँचाया था..

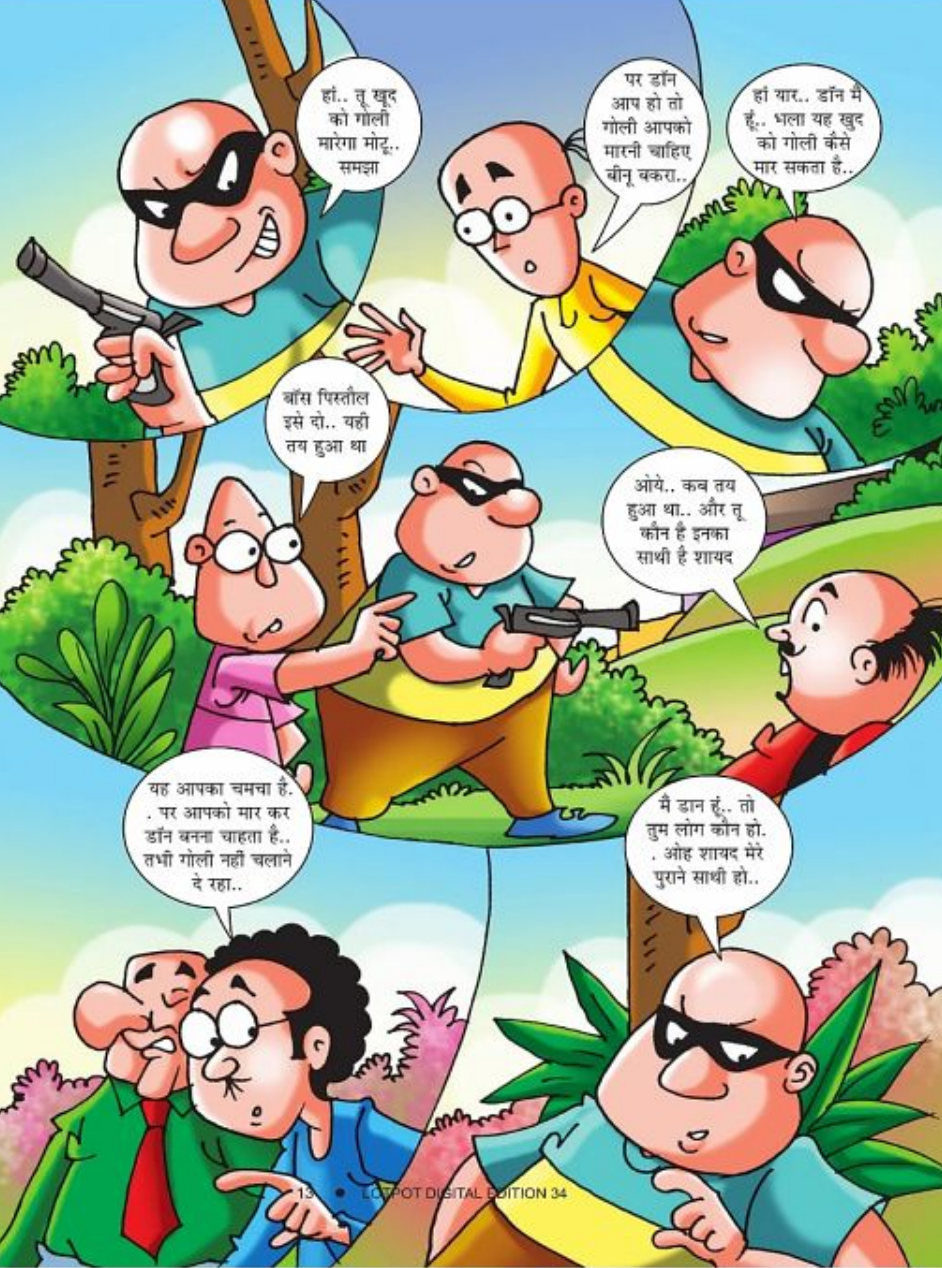
वो उसी का
बदला लेने
इधर ही आ
रहा है..

क्याऽऽ

उसके हाथ में
पिस्तौल है.. तुझे
गोली मारने आ
रहा है..

नहीं..





हां.. तू खुद
को गोली
मारगा मोट्टू..
समझा

पर डॉन
आप हो तो
गोली आपको
मारनी चाहिए
बीनू बकरा..

हां यार.. डॉन मैं
हूँ.. भला यह खुद
को गोली कैसे
मार सकता है..

बॉस पिस्तौल
इसे दो.. यही
तय हुआ था

ओये.. कब तय
हुआ था.. और तू
कौन है इनका
साथी है शायद

यह आपका चमचा है..
. पर आपको मार कर
डॉन बनना चाहता है..
तभी गोली नहीं चलाने
दे रहा..

मैं डॉन हूँ.. तो
तुम लोग कौन हो..
ओह शायद मेरे
पुराने साथी हो..



वाँस.. फिर भूल
गये.. इसे पिस्तौल दो
यह खुद को खुद
गोली मारेगा..

ओके.. ले भाई..
जल्दी से गोली मार
खुद को..

म...मै..

स्वामोश!!

कमाल है.. तुम
गोली चलाने से डरते
हो तो डॉन कैसे बन
गए!

मैं मारूंगा तुझे..
तीन... दो.. एक

No!!

ठां!!



ग..गोली तो
चली थी पर लगी
क्यों नहीं?

वो बाँस को लग
गई.. बाँस फिर धूल
गया कि पिस्तौल
उल्टी चलती है..
तभी तो मोटू को खूद
मरना था.. बूहह

पर अब मैं जेल में
ले जाकर सब कुछ
याद कराऊंगा..
गुर्रर

मोटू.. बाल
बाल खच गया तू
तो..

जाको राखे
साइयाँ.. मार सके
ना कोई!

बुराई का नतीजा

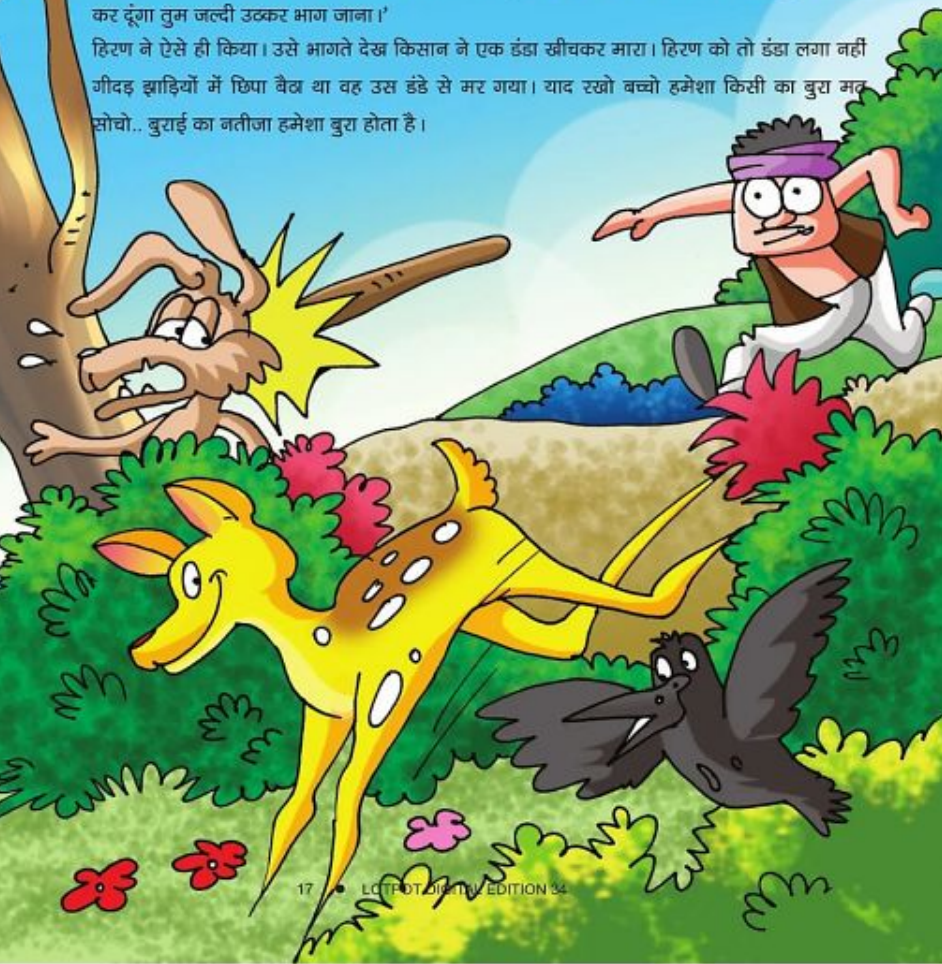
एक घने वन में एक हरीश नामक हिरण और कालू कौआ दोनों रहते थे, दोनों में गहरी दोस्ती थी कालू कौआ सुबह उठकर ऊंचा उड़ता और हरी भरी घास का पता लगाता। फिर वह अपने दोस्त हरीश हिरण को उस जगह का पता बता देता। हिरण पेट भर घास खाता और नदी में पानी पीकर कौआ भी अपना पेट भर लेता। इस तरह दोनों खा पीकर शाम को अपने ठिकाने लौट आते। सुख से खा पीकर हिरण खूब मोटा हो गया था। एक दिन एक दुष्ट गीदड़ की नजर हिरण पर पड़ी। उसने सोचा कि इसे किसी तरह फंसाना चाहिए। ताकि उसका मांस उसे खाने का मिल जाए। उसने हिरण से दोस्ती का नाटक रचाया कालू कौआ समझदार था उसने कहा-“हिरण भाई, इस गीदड़ की नीयत अच्छी नहीं है। तुम इसकी बातों में न आना पर नई नई दोस्ती के चाव में हिरण ने कौए की चेतावनी पर ध्यान नहीं दिया, धीरे धीरे वह सारा दिन गीदड़ के साथ ही रहने लगा। एक दिन गीदड़ ने उसे किसान के खेत में जाने की सलाह दी कुछ दिन बाद किसान ने अपने खेत में जाल बिछा दिया हिरण उसमें फंस गया इतने में गीदड़ आया हिरण को जाल में फंसे देख वह मन ही मन बहुत खुश हुआ। हिरण बोला भाई गीदड़



आप इस जाल को अपने दांतों से काट मुझे छुड़ा दीजिए। दुष्ट गीदड़ बोला अरे भाई हिरण मैं क्या करूं ? आज तो शनिवार है मेरा तो उपवास है, सो मैं मांस को नहीं छू सकता।

अब हिरण को अपनी भूल का पता चला। उस रात को जब हिरण घर नहीं लौटा तो कालू कौआ उसकी खोज में निकला। उसे जाल में फंसा देखकर कौए को बहुत दुख हुआ। हिरण रोने लगा तो कौआ बोला घबराओ नहीं मेरे प्यारे दोस्त! अभी किसान आने ही वाला है तुम मरे हुए हिरण की तरह अकड़कर पड़ जाओ, जब किसान जाल लपेटना शुरू करेगा तब मैं कांव.. कांव करके तुम्हे इशारा कर दूंगा तुम जल्दी उठकर भाग जाना।'

हिरण ने ऐसे ही किया। उसे भागते देख किसान ने एक डंडा खींचकर मारा। हिरण को तो डंडा लगा नहीं गीदड़ झाड़ियों में छिपा बैठा था वह उस डंडे से मर गया। याद रखो बच्चो हमेशा किसी का बुरा मत सोचो.. बुराई का नतीजा हमेशा बुरा होता है।



एक दिन शेखचिल्ली और नूरी जिन आसमान में हवाखोरी कर रहे थे।

वही वह जगह है जहाँ विदेशी जामूसों का आतंक बढ़ता जा रहा है।

सीमा पार के घडयेत्रकारी देशद्रोहियों को हथियार देकर यहाँ तवाही मचाने के लिए भेजते हैं।

शेख चिल्ली

©COPYRIGHT

वह देखो नीचे



हत्यारों का एक रॉकेट लांचर



यहाँ से छोड़ा रॉकेट जहाँ गिरेगा वहाँ उस जगह पर तवाही मचा देगा

इससे पहले मैं इनका ब्राजा बजा दूंगा।



कहाँ गिराना है रॉकेट

शहर के बीचोबीच जहाँ विस्फोट से हाहाकार मच जाए।

दया दे बटन







स्वास्थ्य जानकारी

बच्चों में खांसी जुकाम और गले में खराश

1. बच्चों के गले में खराश को नजरअंदाज न करें कुछ स्ट्रेप्टोकोकस गले के रूप में बुखार पैदा कर सकता है जो कि जोड़ों और दिल के लिए नुकसानदेह हो सकता है।
2. बच्चों के गले के चारों ओर लाल दिखने वाले निशान को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
3. बच्चों में संक्रमित टॉसिलिस को नजरअंदाज नहीं करना चाहिए।
4. बुखार के साथ खांसी फ्लू नहीं हो सकता।
5. फ्लू हमेशा बुखार खांसी और जुकाम में होता है।
6. खांसी, जुकाम और बुखार वायरल हो सकता है।
7. वायरल खांसी और जुकाम में एंटीबायोटिक दवाओं की आवश्यकता नहीं होती।
8. बुखार में अगर खांसी दो सप्ताह से अधिक समय से है तो एंटीबायोटिक दवाओं की जरूरत है।
9. 6 साल से कम उम्र के बच्चों को खांसी रोकने की दवा न दे।
10. बच्चों में खांसी को रोकने का सबसे अच्छा उपाय शहद है।
11. बच्चों में केवल खांसी से ही अस्थमा के लक्षण पता चल सकते हैं।
12. टॉनिक एसिडिटी के कारण खांसी हो सकती है।
13. हर खांसी का एक ही तरह का उपचार हो ये जरूरी नहीं।
14. हाथ लगाकर नहीं खांसना चाहिए या तो खांसते समय रुमाल का प्रयोग करे या फिर किसी अन्य साफ सुथरे कपड़े का।

काटे खां - पाटे खां और अक्ल के अंधे

अंतिम भाग-4







घोरपड़े अगले दिन साढ़े बर्दी में पाटे खां के आफिस में ही मौजूद था, उन्हें अधिक देर इन्तजार नहीं करना पड़ा।

पार्टनर वह आ रही है।



जब उसे अपने साथ हुर धोरवे का पता चला।



उस जासूस के बच्चे को ज़रूर मेरे पति ने ही - यहाँ भेजा होगा।

मैडम। आप अपना परिचय देकर सब कुछ सिलसिले बार बतायें तो ज्यादा अच्छा है।

आपकी तारीफ ?



ये मेरे सहयोगी मि० घोरपड़े हैं। और अपना और इनका परिचय मैं दे ही चुका हूँ।



मेरा नाम प्रमिला माधुर है। मैं दिल्ली के बड़े उद्योगपति कुन्दन लाल माधुर की बीबी हूँ।

जो हां उनकी बहुत सी मिलें और बहुत से कारोबार हैं।



ओह आप कुन्दनलाल जी की पत्नी हैं जिनके ब्यापार साबुन, तेल, कार्मेटिक्स बमैड और जूते हम इस्तेमाल करते हैं।





पर मैंने पति नहीं माने।

उन्होंने साफ कह दिया कि पुलिस कमिश्नर उनका मित्र है, अगर मैं पुलिस स्टेशन जाऊँगी तो कागज सुरक्षित उन तक वापस पहुँच जायेंगे।



इस पर मैंने कहा कि मैं किसी जासूस की मदद लूँगी। आगे उनकी भी जासूसी करवाऊँगी और सारे कागजात अरबबार में छपवाऊँगी।



आपके पति पर इन बातों की क्या प्रतिक्रिया हुई मिसेज माधुर?



उन्होंने कहा कि अगर मैं अरबबार के दफ्तर में गई तो वे मुझे जान से मार देंगे, मैं घबरा गई, दो रोज़ बाद ही मुझे पता चला कि नरेश रुक ट्रक के नीचे आकर कुचल गया।



मुझे लगा! यह मेरे पति का बड्डयन्ल हो सकता है, तब मैं अपनी जान की चिन्ता में भयभीत हो गई। मैंने सोचा कि मैं सब कागजात किसी जासूस को सौंप दूँ। और इस मामले में उसकी मदद लूँ।



मैंने अपनी सहेली से बात-चीत की तो उसने मुझे आपका नाम बताया, अगर जब मेरे पति के जासूस ने वह सब सुन लिया होगा। इसलिए वह यहाँ पाटे रवां बनकर बैठ गया।







अकबर और बीखल

‘द ग्रेटेस्ट टीचर’

उस दिन की दोपहर श्यामू (घर का नौकर) के लिए काफी व्यस्त थी क्योंकि वो पूरा दिन मोर्ति के पीछे भागता रहा। मूर्ति बड़ा ही शरारती बच्चा था और वो कभी किसी का कहा नहीं मानता था।

अचानक किसी चीज के टूटने की आवाज सुनकर मोर्ति का कंजूस पिता कमरे के अंदर दौड़ा चला आता है और वो देखता है कि उसके कीमती दीपवृक्ष के टुकड़े-टुकड़े हो गए हैं ये देखकर वो गुस्से से आग बबूला हो जाता है। वह श्यामू और मोर्ति दोनों से पूछता है कि ये किसने तोड़ा और इस हरकत के पीछे कौन जिम्मेदार है। मोर्ति झूठ बोलता हुए कहता है कि श्यामू ने मुझ पर जोर डाला कमरे के अंदर खेलने के लिए और इसी वजह से ये दीप

वृक्ष टूट गया। कंजूस, श्यामू को प्रताड़ित करते हुए कहता है कि अगर वह ठीक से नहीं रहेगा तो उसे घर से निकालकर फेंक दिया जाएगा।

मोर्ति के माता पिता उसकी शरारतों से अच्छी तरह से वाकिफ थे इतना ही नहीं वे उससे काफी तंग भी आ चुके थे। कई बार तो वह मिर्ची से भरा पूरा बर्तन चावलों में उड़ेल देता जो श्यामू के द्वारा बनाए जाते थे। कई बार वो घर के तकियों और गद्दों को फाड़ देता। कैसे न कैसे वो हर बार अपनी गलती का इल्जाम श्यामू पर लगा देता, जिसके बाद श्यामू को उसके माता पिता से डांट सुननी पड़ती।

एक दिन मोर्ति के कंजूस पिता को अपना बही खाता देखना था अपने ऋण के कारोबार के प्रबंधन के लिए, तभी उसे पता चलता है कि उसके शरारती बेटे ने बही खाते के कागजों की नाव बनाकर नदी में बहा दी। कंजूस यह देखकर बेहद हताश होता है और श्यामू को उसकी लापरवाही के लिए डांटने लगता है और उसे यह कहते हुए नौकरी से निकाल देता है कि वह मोर्ति पर नजर नहीं रखता। मोर्ति ने अपने कंजूस पिता से आग्रह किया कि कम से कम उसकी तीन महीने की तनख्वाह दे दो जिसके लिए उसने काम किया है लेकिन मोर्ति के कंजूस पिता इस



बात को अस्वीकार कर देते हैं और इसके बाद मोर्ति हताशा होकर वहाँ से चला जाता है। मोर्ति के माता पिता काफी विवर्धित थे और वे अपने बेटे को सही रास्ते पर लाने के लिए और उसकी शरारतों को रोकने के लिए दिमाग लगाते हैं। मोर्ति के माता पिता इस मसले पर वीरबल से सलाह लेने का निर्णय लेते हैं। इसी बीच वीरबल को झामू के साथ किए गए दुर्व्यवहार के बारे में पता चलता है साथ ही उसे यह भी पता चलता है कि इससे पहले भी ये ऐसा कर चुका है और ये लोगों को पैसे न देकर उनसे मुफ्त में सेवाएँ लेने का आदी था। ये सब जानने के बाद वीरबल उस कंजूस को सबक सिखाने का निर्णय ले लेता है इन सब बातों से अंजान मोर्ति का कंजूस पिता वीरबल से मदद करने का आग्रह करता है वो वीरबल से ऐसे कुछ सुझाव मांगता है जो शरारती मोर्ति को अच्छे से पालने में मदद कर सके। वीरबल उसे सुझाव देता है कि तुम एक अच्छा शिक्षक रख लो जो मोर्ति को गुणवत्तापूर्वक प्रशिक्षण प्रदान कर सके और यह एक अच्छा तरीका भी है उसे दिन भर व्यस्त रखने का। यह तरकीब कंजूस के लिए काम कर जाती है मोर्ति का जो नया शिक्षक (पीटर) था वो बहुत ही ज्यादा मेहनती था और उसने गंभीरता से मोर्ति को जिंदगी के बारे में काफी अच्छी चीजें सिखाईं। वो यह भी सुनिश्चित करता है कि मोर्ति अपनी उर्जा अच्छे और रचनात्मक कार्यों में लगाएगा। समय के साथ मोर्ति के स्वभाव में भी काफी बदलाव आता है मोर्ति अब बड़ों का आदर करना सीख जाता है साथ ही आस पास के लोगों के प्रति भावुक होने लगता है लेकिन जैसे ही तीन महीने बाद पीटर अपनी तनखाह मांगता है तो कंजूस मना कर देता है और उसे एक पैसा भी देने के लिए राजी नहीं होता। कंजूस उस पर आरोप लगाते हुए कहता है कि वो उसकी तुलना में बहुत अधिक खाना खा गया जितना की उसने उसे काम पर

रखने से पहले सोचा था। दोनों के बीच काफी बहस होती है वीरबल उस दौरान कंजूस के घर आया हुआ था। स्थिति के बारे में पता चलने के बाद वीरबल उसके सामने एक ऐसे टीचर को पेश करता है जो उसके बेटे को मुफ्त में पढ़ाएगा और खाने के लिए एक दाना भी नहीं लेगा। कंजूस को ये प्रस्ताव इतना अच्छा लगा कि वो इससे इनकार नहीं कर पाता और उसने वीरबल से उस नए शिक्षक का परिचय कराने को कहा। वीरबल ने एक चाल चली और एक शर्त रखी कि वो तभी उसे नए शिक्षक से मिलवाएगा जब वो झामू और पीटर की तनखाह देगा जो उसने काफी समय से रोक कर रखी हुई है। कंजूस इस बात के लिए राजी हो जाता है और अपने भारी मन से सभी के पैसे दे देता है। जब उसने वीरबल को नया टीचर लाने को कहा तो वीरबल ने कंजूस को गौतम बुद्ध की मूर्ति देते हुए कहा कि ये ही पूरे संसार के सबसे बड़े शिक्षक हैं। इस बात पर कंजूस हँसा और उसने स्वीकार किया कि वीरबल ने बड़ी ही चालाकी से उसे इस बात का एहसास करवाया कि मोर्ति को एक अच्छे शिक्षक की जरूरत है और उसे अच्छी रकम दी जानी चाहिए।

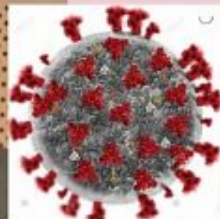




इंसान के ज्ञान की अथाह कुंजी बन गया है गूगल ! जानिए पंडित गूगल के परिवार की कहानी !!

- शरद राय

आज छोटी सी छोटी जानकारी लेनी होती हो तो कहा जाता है गूगल पर जाओ ! इंसानी ज्ञान की अथाह कुंजी बन गए हैं गूगल महाराज ! महाभारत के संजय की तरह गूगल सर्वदृष्टा है। संजय तो सिर्फ धृतराष्ट्र की आंखें थे, गूगल महाराज तो हर किसी के ज्ञान चक्षु है। छोटा बच्चा हो, टीनएज हो, नौकरी मुदा, व्यवसायी, वाहन चालक, वैज्ञानिक, टीचर, चोर- डाकू, बुजुर्ग या धर्म के खोजी... जो भी हो, उनका मार्ग दर्शक सेवक गूगल सेवा में हाज़िर है। इस सेवादर के बारे में कभी जानने की कोशिश किया है आपने? नहीं, तो आइए हम बताते हैं।



गूगल का मतलब क्या हुआ, ज्यादातर लोग यही नहीं जानते। हम बताते हैं : 1 के पीछे 100 शून्य(0) लगाने से जो संख्या बनती है उसे "Googole" कहते हैं। जब इंटरनेट पर इस विधा की शुरुआत की गई थी तब यही नाम रखा जाना तय हुआ था। बाद में, टाइप में मिस्टेक के कारण 'googole' को जगह 'google' टाइप हो गया। यह गलती बनी रह गई और उस गलत नाम के साथ आज गूगल हमारा साथी बना हुआ है। एक ऐसा साथी जो पग पग पर हमारा मार्ग दर्शक है।

एक बार बीबी के बिना रह सकते हैं लेकिन गूगल- हथियार (मोबाइल, लैपटॉप जो भी) के बिना नहीं... बिंदगी असंभव लगती है। गूगल के संस्थापक सिर्फ दो लोग थे- लैरीपेज और सर्जेंत्रिन। आज इस कम्पनी में 417000 से ज्यादा कर्मचारी काम करते हैं। आज हर हफ्ते इस कम्पनी में नौकरी पाने के लिए 2 लाख 20 हजार लोग आवेदन करते हैं। जिन कर्मचारियों ने यहां काम किया या कर रहे हैं उनमें से कितने अरबपति बन चुके हैं। 40 देशों में 70 से ज्यादा गूगल के ऑफिस हैं। पिछले 12 साल में कम्पनी ने 827 कम्पनियां खरीदी हैं (यह आंकड़ा दो साल पहले का है, अब बढ़ गया

होगा) जो एक रिकॉर्ड है।

एक आश्चर्य जनक सत्य इस कम्पनी के मुख्यालय को लेकर है कि यहां 20 हजार बकरियां काम करती हैं। ये बकरियां दफ्तर से जुड़े लॉन की घास काटती (खाती) हैं ताकि मशीन चलाने के शोर से तथा धुएँ से बचा जा सके। सन 2010 के बाद से गूगल ने प्रति सप्ताह एक कम्पनी को खरीदा है ('कोरोना' के दौरान में और बढ़ि हुई होगी, जिसकी जानकारी उपलब्ध नहीं है)। गूगल ने सन 2006 में youtube खरीदा



था, तब कहा गया था कि यह उनकी सबसे बड़ी गलती साबित होगी। आज **youtube** दुनिया में हर महीने 6 अरब घंटे तक देखा जाता है। हर घंटे 69000 से ज्यादा सर्च किया जाता है। कोविड - काल में यह आँकड़ा तो बहुत ज्यादा ही बढ़ गया है। गूगल का सर्च इंजन 100 मिलियन गीगा बाइट का है। इस डाटे को सेव करने के लिए एक टेराबाइट की एक लाख ड्राइव की जरूरत होती है।

अब जान लीजिए गूगल की कमाई भी। एक साल की कम्पनी की आय 50,00,00,00, 000, 000, 000, 000, 000 डॉलर है। एक सेकेंड की कमाई 9,30,900 रुपये होती

है। ऐसा माना जाता है कि पलक झपकते 550 रुपये कमा लिए होंगे। एक और जानने वाली बात है कि जब गूगल लांच हुआ था, इसके मालिक को **HTML** कोड की जानकारी नहीं थी, इसलिए होम पेज सिंपल रखा गया था जो आज भी वैसा ही है। स्ट्रीट व्यू मैप के लिए इस कम्पनी ने 80 लाख 46 हजार किलोमीटर सड़क के बराबर फोटोग्राफ किये हैं। गूगल मैप और गूगल अर्थ एप्लिकेशन के द्वारा आज ये पूरी दुनिया माप सकते हैं। और, अब पहुँच चांद तक है।

ऐसा है पंडित गूगल के ज्ञान का भंडार !!

मनुष्य का प्रथम गुण

बंटी! चलो! खाना खालो! अन्दर रसोई से मां ने बंटी को आवाज लगाई!

'नहीं, मैं खाना नहीं खाऊंगा' बंटी ने अपने कमरे से ही मुंह फुलाए उत्तर दिया।

'क्यों! क्यों नहीं खाओगे?' मां कमरे में प्रवेश करती हुई बोली।

'नट्टू ने मेरी कमीज पहन ली है।' बंटी मुंह फेरते हुए बोला। 'तो क्या हुआ। नट्टू तुम्हारा छोटा भाई है।' मां बंटी के पास बैठती हुई बोली। 'पर कमीज तो मेरी है न!' तभी मां ने बंटी को प्यार से संभारते हुए उससे पूछा- 'बेटे क्या तुम जानते हो मनुष्य का प्रथम गुण क्या है?'

'नहीं!' 'तो सुनो... एक गांव में एक ब्राह्मण रहता था वह बड़े ही लालची स्वभाव का था। वह किसी को भी अपनी वस्तु देना तो दूर लेने के नाम से उसे छूने तक नहीं देता था।

एक दिन किसी काम से उसे शहर जाना पड़ा, रास्ते में

एक आदमी से उसकी मुलाकात हुई वह भी शहर जा रहा था, दोनों साथ मिलकर बातें करते करते हुए शहर की ओर बढ़ने लगे।

बीच रास्ते में उन्होंने एक पोटली देखी। देखते ही ब्राह्मण ने झट से पोटली उठा ली और उसे खोल कर देखा। पोटली में ढेर सारे सोने के सिक्के थे उसने तुरन्त उस पोटली को अपने झोले में डाल दिया। तभी उसके साथी ने उससे कहा 'भाई देखो उस पोटली पर मेरा भी अधिकार है। क्योंकि हम दोनों ने उसे एक साथ देखा था। अतः मुझे भी उसमें से कुछ सिक्के दे दो।

यह सुनकर ब्राह्मण ने कहा:- 'वाह! तुम्हें क्यों दू? मैं बिल्कुल नहीं दूंगा, इस पर सिर्फ मेरा ही अधिकार है क्योंकि मैंने पहले उठाया है' ये सुनकर उसके साथी ने कहा 'ठीक है भाई यदि मुझे रंजमात्र भी हिस्सा नहीं देना चाहते तो मैं कदापि नहीं लूंगा।

शहर में आकर दोनों अलग हो गए और अपने अपने काम निपटाने लगे। ब्राह्मण एक दुकान से सामान खरीद कर पैसे

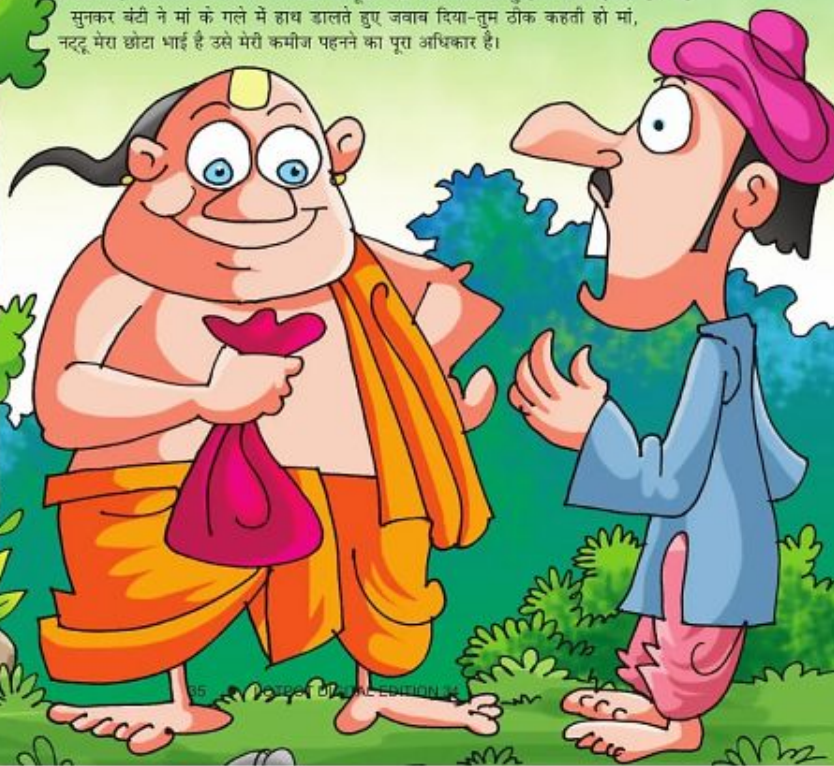


दे रहा था कि एक चोर की निगाह उसी पोटली पर पड़ी। चोर आहिस्ते से उसके हाथ में धरे झोले को झपट कर ऐसे भागा कि ब्राह्मण ठगा सा रह गया, ब्राह्मण के शोर मचाने से पहले वह भौड़ में न जाने कहाँ खो गया पता न चला। वह सिर पर हाथ धर के रोने लगा, अब उसके पास कुछ खाने के लिए भी पैसे नहीं थे ही सारे उसके अपने पैसे एवं पाए हुए सोने के सिक्के तो उसी झोले में थे।

शाम को भूखे प्यासे वह अपने गांव लौट रहा था तब रास्ते में उसी आदमी से उसकी मुलाकात हुई वह भी अपने घर लौट रहा था, उसने ब्राह्मण की दयनीय स्थिति देखी और उससे पूछा-कहो मित्र क्या बात है तुम बड़े परेशान नजर आ रहे हो? ब्राह्मण ने उसे अपनी सारी कहानी बताई और भेहा, मैं बहुत भूखा हूँ, अब बिना कुछ खाए मुझसे एक कदम भी चला नहीं जा रहा है। सुनकर उस आदमी ने लड़खड़ाते हुए ब्राह्मण को सहारा देते एक वृक्ष की छाया के नीचे बिठाया और अपने झोले से रोटी निकाल कर उसे देते हुए बोला। लो मित्र तुम इसे खा लो इसमें तुम्हें कुछ शान्ति मिलेगी।'

तब ब्राह्मण रोटी लेते हुए अपने किए हुए कर्म पर परचाताप करते हुए उससे पूछा मित्र एक मैं हूँ जो रास्ते में पाए हुए पराये धन का एक हिस्सा भी तुम्हें नहीं दिया और एक तुम हो जो अपने हिस्से की रोटी मुझे दे दी। और वह रो पड़ा। यह सुनकर उस आदमी ने उसे चुप कराते हुए कहा बंधु। सहनशक्ति और त्याग का गुण मनुष्य का प्रथम गुण है, इसे जीवन में सदा अपनाए रखना चाहिए।

तब कहानी समाप्त करके माँ ने बंदी से पूछा-बेटा अब बताओ तुम्हारा क्या इरादा है? वह सुनकर बंदी ने माँ के गले में हाथ डालते हुए जवाब दिया-तुम ठीक कहती हो माँ, नदरू मेरा छोटा भाई है उसे मेरी कमीज पहनने का पूरा अधिकार है।



विश्वनाथन आनन्द का जन्म 11 दिसम्बर 1969 को हुआ। वे भारतीय शतरंज के ग्रैंड मास्टर और विश्व शतरंज के चैम्पियन हैं। वर्ष 2000 से 2002 तक के फाइट वर्ल्ड क्लास शतरंज के चैम्पियन रहे। 2007 में भी उन का वही स्थान बना रहा और 2008 उन्होंने ब्लादिमीर क्रामनिक को हराया। 2010 में उन्होंने एक और विश्व स्तर के खिलाड़ी वेसेलिन तोपालोव को हराया और 2012 में फिर बोरिस गैलफैन्ड को हरा कर विश्व चैम्पियनशिप में विजय पायी।

2013 में वे मैगनस कैरसन और 2014 में फिर उसी से विश्व चैम्पियनशिप में हार गये। 21 महीने तक उन की गणना विश्व के सर्वोच्च खिलाड़ियों में की जाती रही है। वर्ष 1988 में वे भारत के प्रथम ग्रैंड मास्टर घोषित किये गये। भारत सरकार ने 1991-92 में उन्हें राजीव गांधी खेल रत्न पुरस्कार से सम्मानित किया। वे भारत के पहले खिलाड़ी हैं जिन्हें पद्मविभूषण पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।

उनका जन्म तमिलनाडु राज्य में हुआ था जन्म के कुछ समय बाद ही उन का परिवार चेन्नई आ कर बस गया। उन्हें शतरंज की शिक्षा अपनी माँ और परिवार के एक मित्र दीपा रामाकृष्ण से मिली। 6 वर्ष की आयु से ही वे शतरंज पर अभ्यास करने लगे थे।

14 वर्ष की आयु में ही उन्होंने नेशनल सब जूनियर चैस चैम्पियनशिप जीत ली थी। उन्हें 9/9 अंक मिले थे। एक वर्ष बाद ही वे इंटरनेशनल मास्टर घोषित कर दिये गये। 16 वर्ष की आयु में लगातार दो वर्ष तक उन्होंने नेशनल चैम्पियनशिप जीती 1987 में वे पहले भारतीय खिलाड़ी थे जिसने विश्व जूनियर चैस चैम्पियनशिप जीती। 18 वर्ष की उम्र में ही उन्होंने कोयंबटूर में आयोजित शक्ति फाईनेन्स अंतर राष्ट्रीय प्रतियोगिता जीत कर भारत के प्रथम ग्रैंड मास्टर होने का गौरव प्राप्त किया। 18 वर्ष की आयु में उन्हें भारत सरकार की ओर से पद्मश्री से सम्मानित किया गया। मार्च 2015 में एक छोटे ग्रह का नाम 4538 विश्वनाथन रखा गया है जो उन के और भारत देश के लिये एक अत्यंत गौरव की बात है।





मेहनत का फल

रामू पढ़ाई में बहुत ही होशियार था उसके मन में बहुत उम्मीदें थी कि वह पढ़ लिखकर बड़ा आदमी बनेगा। पर वह हमेशा उदास रहता था परीक्षा निकट थी रामू की मां ने देखा वह हमेशा चुप उदास बैठा आसमान देखा करता है। उसने रामू से पूछा 'बेटा क्या बात है तुम उदास क्यों बैठे हो।' रामू कुछ न बोला मां के बार बार आग्रह करने पर उसने कहा, मां मैं कक्षा में हर बार प्रथम आता हूँ पर आप मुझे खुश करने के कुछ भी उपहार नहीं दिलाती।

रामू ने कहा मां मेरी कक्षा के जो लड़के मुझ से कम अंक पाते हैं उसके पिता उन्हें खूब चॉकलेट टॉफी दिलाते हैं। उन्हें मन पसन्द खिलौने लाकर देते हैं पर तुम मुझे कभी भी कुछ नहीं दिलाती।' रामू की मां इस बात से परेशान हुई उसके चेहरे पर निराशा का भाव छा गया। वह कुछ मिनट मौन रखकर बोली परिश्रम करो ईश्वर तुमसे प्रसन्न होकर तुम्हें स्वयं उपहार देगा। यह बात रामू की समझ में आई वह खुश हो उठा और मन लगाकर पढ़ने लगा।



रामू ने रात दिन मेहनत की और परीक्षाओं में मूझ-बूझ से अच्छा काम किया। परिणाम का दिन भी आ गया रामू इस बार फिर कक्षा में प्रथम आया है।

कक्षा में सब बच्चों ने जोर से ताली बजाई मास्टर जी ने भी रामू को पीठ थपथपाई। रामू खुशी-खुशी घर आ रहा था उसका घर विद्यालय से काफी दूर गांव के दूसरे किनारे पर था वह अपनी धुन में मस्त जा रहा था। राह में थोड़ी दूर उसे पेड़ के नीचे बैठी बुढ़िया दिखाई दी। उसके पास टोकरी में खिलौने फल मिठाई व चाकलेट थे बुढ़िया ने रामू से कहा, 'बेटा मैं दूर गांव से आई हूँ और मुझे गांव के दूसरी ओर जंगल पार करके जाना है थकावट के मारे मुझसे बोझ उठाया नहीं जाता। तुम मेरा टोकरा उठाकर चल पड़ा।

रामू को माँ की सीख याद आई कि सदा दुखी व बूढ़े व्यक्ति की मदद करनी चाहिए। उसने बुढ़िया का टोकरा

उठाया व चल पड़ा। रामू आगे आगे व बुढ़िया पीछे-पीछे चल दी। बुढ़िया ने रामू से पूछा 'बेटा कौन सी कक्षा में पढ़ते हो, मैं पाचवी में आ गया हूँ। बुढ़िया ने रामू को समझाया बेटा तुम्हारी माँ परिश्रम की कमाई से तुम्हें पढ़ाती है। तुम मन लगाकर पढ़ना और एक बात याद रखना कि परिश्रम कर फल मीठा होता है।

रामू आगे चलता गया अब उसका घर आने वाला था उसने कहा। बुढ़िया माँ अब मेरा घर आने वाला है तुम कुछ देर विश्राम कर अपना टोकरा लेकर चली जाना, उसे कोई जवाब न मिला। रामू आश्चर्य चकित हुआ कि बुढ़िया माँ बोलती क्यों नहीं है। उसने पीछे मुड़कर देखा तो वहाँ कोई नहीं था उसने जोर से आवाज लगाई, बुढ़िया माँ बुढ़िया माँ पर कोई प्रत्युत्तर न मिला।

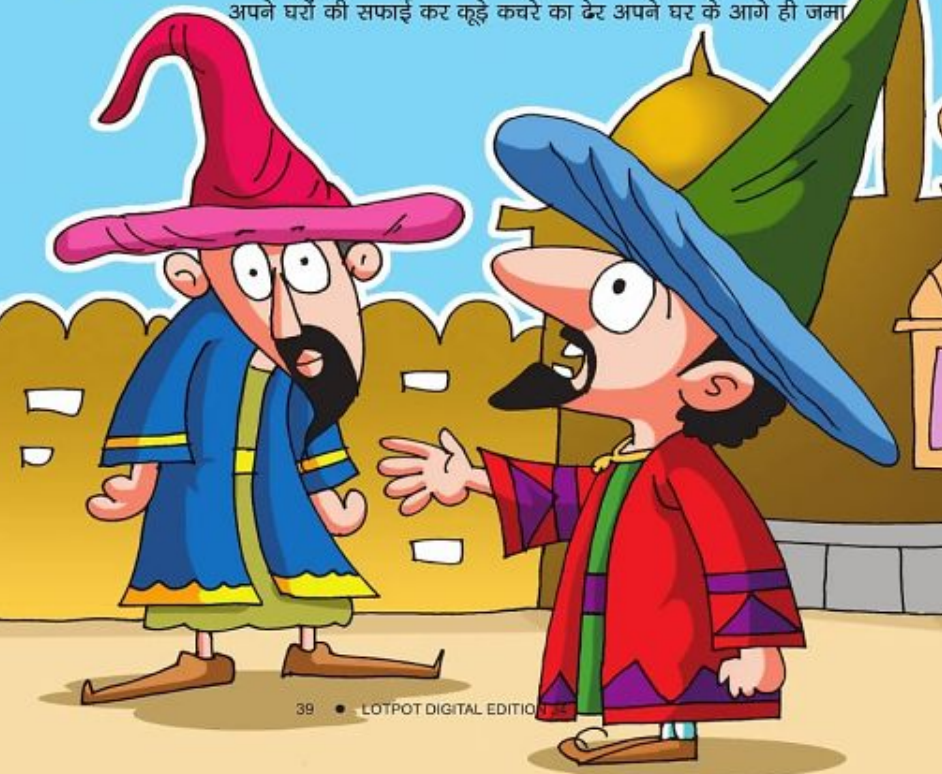
अन्त में परेशान होकर उसने टोकरा उठाया व घर आ गया रामू ने दुखी मन से सारी बात माँ को बताई। माँ ने सब सुनकर मुस्कराई उसने रामू को छाती से लगा लिया और कहा बेटा यही तुम्हारा उपहार है।



सफाई प्रतियोगिता

बगदाद देश का एक बादशाह साफ सफाई पसन्द करता था। उसको गन्दगी तनिक भी न सुहाती। एक दिन उसने अपने मुख्य मंत्री से कहा-मंत्री जी! मैं आप को बड़ा बुद्धिमान समझता हूँ। आप अपनी बुद्धिमानी के जरिये एक ऐसे इंसान की खोज करें-जिसे मैं अपना स्वास्थ्य मंत्री बना सकूँ।

मंत्री ने अपनी बुद्धि से काम लिया। बादशाह को सफाई पसन्द बहुत थी फिर भी उसने पूरी राजधानी में यह ऐलान करवाया। कल प्रातःकाल सफाई प्रतियोगिता का विशेष आयोजन किया जा रहा है। उसमें प्रत्येक नागरिक को भाग लेना अनिवार्य है। प्रत्येक नागरिक अपने अपने घरों की सफाई कर कूड़े कचरे का ढेर अपने घर के आगे ही जमा



करें। खुद बादशाह सलामत कूड़े का निरीक्षण करेंगे और विजेता को विशेष इनाम भी देंगे।

राज घराने का यह ऐलान सुन कर सब लोगो ने अपने-अपने घर का कूड़ा कचरा बाहर जमा कर दिया। अपने अपने घरों का कूड़ा कचरा बाहर जमा करने लगे। दूसरे दिन सुबह बादशाह और मुख्यमंत्री अपनी राजधानी का नजारा देखने निकले। मार्ग में दोनों तरफ कचरे के ढेर जमा थे। सहसा एक झोपड़ी ऐसी देखी, जिसके सामने कचरे का ढेर नहीं था। झोपड़ी के द्वार पर एक नवयुवक खड़ा था

मुख्यमंत्री ने उससे पूछ-‘आपके घर का कचरा कहाँ है?’

नवयुवक ने कहा- ‘मेरे घर में कूड़ा था ही नहीं। प्रतियोगिता में भाग लेता कैसे? यह प्रतियोगिता उन्हीं के लिए थी जिनके घर में कूड़ा कचरा हो..

नवयुवक में मुख में ऐसी बात सुनकर बादशाह का चेहरा ताजा फूल की तरह खिल उठा। उसने मंत्री से कहा आपकी बुद्धिमानी ने वास्तव में अच्छा काम किया है। हां यह नवयुवक ही हमारे राज्य का सच्चा सफाई पसन्द मंत्री बनेगा।

बादशाह ने नवयुवक को बहुत सा इनाम देकर उसे अपने राज्य का स्वास्थ्य मंत्री बना लिया।



यात्रा

जगन्नाथ पुरी



यह स्थान ओडिसा राज्य में पुरी जिले में स्थित है। यह हिन्दुओं का एक अत्यंत पवित्र स्थान है। और सागर तट पर स्थित है।

इस नगर में 11वीं शताब्दी में बनाया गया पुरी जगन्नाथ का मन्दिर। प्रत्येक वर्ष रथ यात्रा समारोह में लाखों भक्तों द्वारा देव जगन्नाथ, बलभद्र, देवी समुद्रा और वे सुदर्शन को सवारी निकाली जाती है जिसे भक्त स्वयं खींचते हैं। निकटम हवाई अड्डा भुवनेश्वर है जहां से हर समय आराम दायक बसे मिल जाती हैं। दक्षिण और पूर्व दोनों दिशाओं से यह स्थान रेलमार्ग द्वारा भी जुड़ा हुआ है।

जगन्नाथ पुरी की गणना चार धामों में की

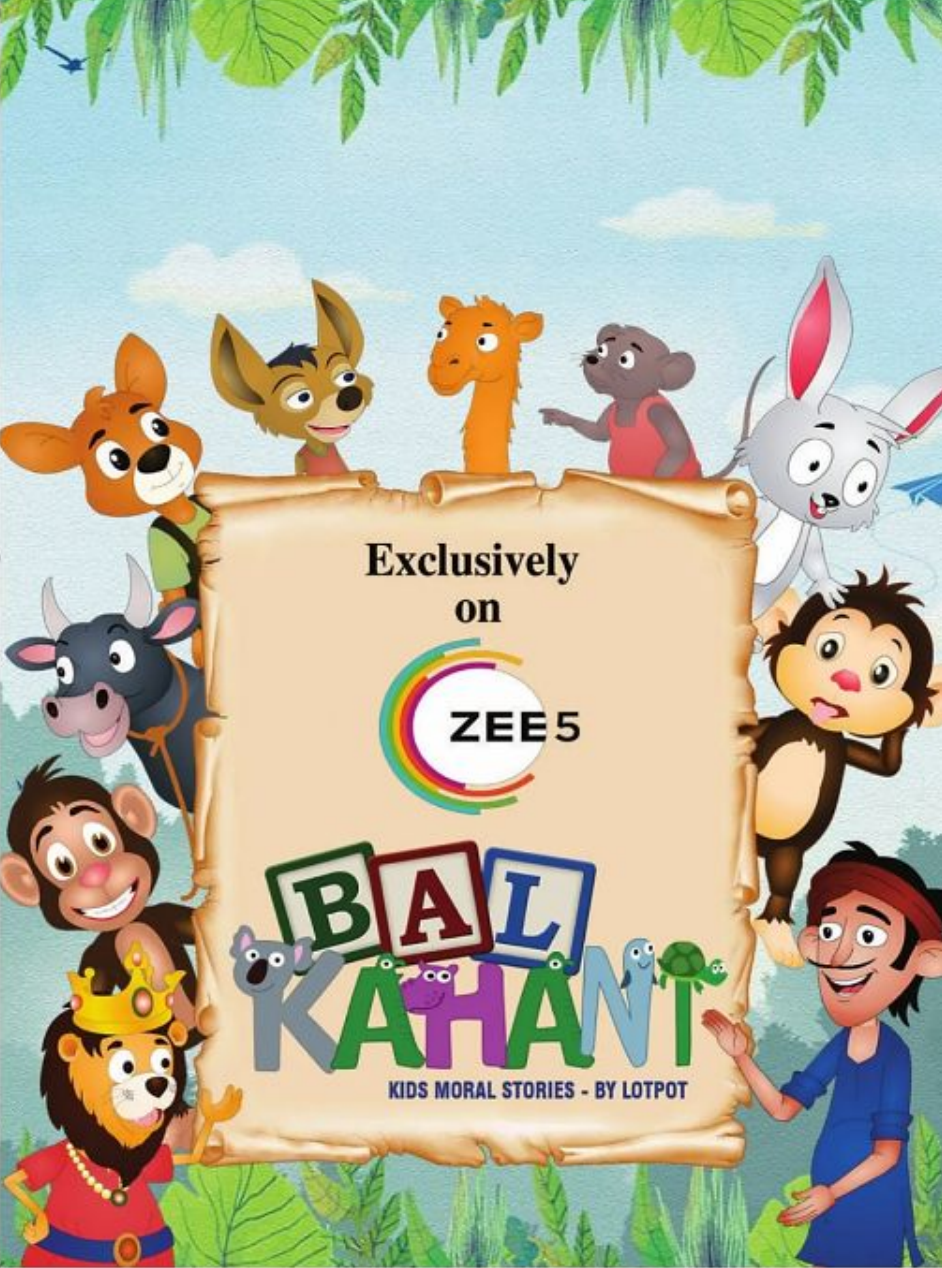


जाती है। ऐसी मान्यता है कि इस मन्दिर के पूजा के बिना कोई तीर्थ यात्रा सम्पूर्ण नहीं होती। इस नगरी का वर्णन कई प्राचीन ग्रंथों और प्राणों में मिलता है। विदेशियों का प्रवेश इस मन्दिर में वर्जित है पर वे यहां मनोरम सागर तट का आनन्द लेने आते हैं।

पुरी के साथ साथ ओडिसा के अन्य दर्शनीय स्थलों को देखने की योजना बनाई जा सकती है। यहां से 35 किलोमीटर की दूरी पर प्रसिद्ध सूर्य मन्दिर है। चिलका झील यहां से 50 कि.मी. दूर है।

इस झील में विदेशों से आए अनेक प्रकार के प्रवासी पक्षी देखे जा सकते हैं।





Exclusively
on



BAL KAHANI

KIDS MORAL STORIES - BY LOTPOT